14/05/2020

L.S.W

BA (Hons) Paper I ①

Part I

Dr Pankaj Kumar Yadav
S.N.S.R.K.S College Saharsa
Department of L.S.W

Date

Page

Q10 Define Unemployment: Types and causes, unemployment situation in India measure of fighting employment, special employment measures of the Government. – बेरोजगारी; प्रकार और कारण, भारत में बेरोजगारी की स्थिति, बेरोजगारी दूर करने का उपाय, भारत सरकार द्वारा रोजगार सृजन करने के उपायों को परिभाषित किजीए।

Ans :- सामान्यत:, जब कोई व्यक्ति अपने जीवन-निर्वाह के लिए किसी काम में नहीं लगा हो तो उसे बेरोजगार कहते हैं लेकिन एक आलसी व्यक्ति अपनी इच्छा से कोई कार्य नहीं करता हो तो उसे बेरोजगार नहीं कहा जाएगा। जब काम चाहने वाले व्यक्तियों को इच्छा एवं योग्यता रहने पर भी मजदूरी की प्रचलित दरों पर काम नहीं मिलता है और अपनी इच्छा के तो इसे बेरोजगारी की स्थिति कहते हैं। इस प्रकार, बेरोजगार व्यक्ति वे हैं जो अपनी इच्छा के विरुद्ध बेकार हैं। वे काम कर सकते हैं तथा करना भी चाहते है परन्तु उनके लिए रोजगार के लिए लाभप्रद अवसर उपलब्ध नही हैं।

~~वर्ग की कार्यशील~~ परन्तु यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि एक निश्चित आयु-वर्ग की कार्यशील जनसंख्या को ही बेरोजगारों की श्रेणी में रखा जाता है। हमारे देश में प्राय: 15 से 59 वर्ष की आयुवर्ग की जनसंख्या को कार्यशील जनसंख्या में शामिल किया जाता है। इस प्रकार यदि परिवार के छोटे बच्चे या बूढ़े जीविकोपार्जन के लिए कोई कार्य नहीं करते हैं तो उन्हें बेरोजगार नहीं कहा जा सकता है।

आज विश्व के कई देशों में बेरोजगारी की समस्या गंभीर बनी हुई है। अधिक जनसंख्या वाले विकासशील देशों में तो इसकी व्यापकता और जटिलता अधिक है। अनुमान किया जाता है कि भारत में 4 (चार) करोड़ से भी अधिक लोग बेरोजगार है। देश में ग्रामीण क्षेत्रों में अर्द्धरोजगारी भी व्यापक रूप से फैली हुई है जहाँ जीविकोपार्जन के लिए लोगों को रोजगार पर ही निर्भर होना पड़ता है। यहाँ इसके दुष्प्रभाव भी व्यापक रूप से पड़ते हैं। कुछ देशों में ऐसी व्यवस्था नहीं है। कई संविधान के अन्तर्गत ही काम के अधिकार को नागरिक के मूल अधिकार में सम्मलित किया गया है, लेकिन अधिकांश देशों में ऐसा व्यवस्था नहीं है। कई विकसित पूंजीवादी देशों में भी बेरोजगारी बड़ी संख्या में फैली हुई है। अधिकांश देशों में इस समस्या के समाधान के लिए सरकार द्वारा विशेष कदम उठाए गए हैं, लेकिन इनमें सफलता केवल आंशिक रूप से ही मिल पायी है।

बेरोजगारी को कुछ विद्वानों ने निम्न रूप से परिभाषित किया है :-

(1) Richard A. Lester ने अपनी पुस्तक "Economics of Labour" के अन्तर्गत कहा गया है कि बेरोजगारी एक आर्थिक समस्या है जो किसी भी ...

व्यवस्था को कमजोर करती है।

2. Prof Pigou (प्रो. पिगू) के अनुसार "बेरोजगारी का अर्थ - मजदूरी अर्जकों के वर्गों में केवल मजदूरी-कार्य से संबंध काम का अभाव (Unemployment means employment among the wage earning classes and in respect of wage work only)

3. Karl Pribam (कार्ल प्रिबम) के शब्दों में: "बेरोजगारी की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया है - "बेरोजगारी श्रम-बाजार की वह स्थिति है, जिसमें श्रम-शक्ति की आपूर्ति उपलब्ध नौकरियों की संख्या से होती है" (Unemployment is a condition of labour market in which the supply of labour power is greater than number of available openings)

4. Fairchild (फेयरचाइल्ड) के अनुसार "सामान्य कार्य अवधि में, सामान्य मजदूरी पर तथा समान कार्य की दशाओं में सामान्य शक्ति के किसी सदस्य के लाभप्रद कार्य से बलपूर्वक या अनैच्छिक रूप से विलग हो जाने की स्थिति" (Unemployment is enforced or involuntary separation from remunerative work on the part of a member of the normal working force, during normal working time at normal wages, and under normal working condition).

Type of Unemployment (बेरोजगारी के प्रकार)

बेरोजगारी का वर्गीकरण कई तरह से किया जाता है, लेकिन अभिकरण वर्गीकरण में उसके कारणों और स्वरूप को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के कुछ महत्वपूर्ण प्रकार निम्नलिखित हैं:-

अस्वैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary employment) :- अस्वैच्छिक बेरोजगारी ऐसी बेरोजगारी है, जिसमें लोगों में काम करने की इच्छा और क्षमता तो होती है, लेकिन उन्हें काम नहीं मिल पाता है और मिलता भी है तो प्रचलित मजदूरी से बहुत कम दर पर। सामान्यतः बेरोजगारी को इसी व्यापक रूप में देखा जाता है।

(2) घर्षणजन्य बेरोजगारी (Friction Unemployment) अस्वैच्छिक बेरोजगारी ऐसी बेरोजगारी है, जिसमें लोग रोजगार खोजने तथा रोजगार के उपलब्ध अवसरों के बीच घर्षण या प्रतिरोध के कारण उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए औद्योगिक या आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन के कारण विशेष प्रकार के श्रमिकों की माँग होती है और उपलब्ध योग्यता वाले व्यक्तियों को काम नहीं मिल पाता। इसी तरह, कई क्षेत्रों में या उद्योगों में कार्य उपलब्ध रहते हैं लेकिन उनकी जानकारी

Dr. ... Department of ... G. P. S. R. K. S. College Saharsa

नहीं रहने के कारण लोगों को रोजगार नहीं मिल पाता। दूसरे रूप में प्रतिरुद्ध बेरोजगारी श्रमिकों की मांग पूर्ति से संबद्ध तत्वों के बीच उत्पन्न होती है।

3. प्रौद्योगिक बेरोजगारी (Technoical Unemployment) प्रौद्योगिक बेरोजगारी यांत्रिकी विकास के साथ-साथ उत्पादन प्रक्रियाओं में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। नए-नए प्रौद्योगिक आविष्कारों जैसे स्वचलित मशीनों एवं कंप्यूटरों के प्रयोग से पुरानी मशीनों और प्रक्रियाओं पर कार्यरत श्रमिकों विस्थापित होकर बेकार हो जाते हैं। साथ ही, इन आधुनिक मशीनों और यंत्रों के प्रयोग से कम संख्या में लोगों को नियोजित करने की आवश्यकता होती है। वृहत पैमाने के उद्योगों की स्थापना से भी छोटे या लघु उद्योगों में काम करने वाले श्रमिक बड़ी संख्या में बेरोजगार हो जाते हैं।

4. मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment) कुछ नियोजनों में वर्ष की विशेष अवधि या मौसम के अनुसार आर्थिक क्रियाओं में उतार चढ़ाव आते रहते हैं जिसके फलस्वरूप श्रमिकों की मांग कभी बढ़ती है और कभी घटती है। मौसमी या सामिक परिवर्तनों के कारण होने वाली बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं। उदाहरणार्थ, चीनी उद्योग, गोदी (dock) तथा निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों को शिथिल अवधि या मौसम में काम नहीं मिल पाता है वे बेरोजगार हो जाते हैं।

5. अल्पबेरोजगारी या अद्धरोजगारी (Under employment) अल्परोजगारी ऐसी बेरोजगारी है, जिसमें लोगों को प्रचलित मानकों के अनुसार पूरी अवधि के लिए रोजगार नहीं मिल पाता है और शेष अवधि में उसे कोई काम नहीं मिलता। उदाहरणार्थ, अगर किसी व्यक्ति को वर्ष में केवल एक, दो या चार महीने तक ही मिल पाता है और शेष और शेष अवधि में उसे कोई काम नहीं मिल पाता तो उसे उसे अल्परोजगार स्थिति कहेंगे। कीन्स (Keynes) के अनुसार "जब किसी श्रमिक को प्रचलित मजदूरी से कम दर पर काम करना पड़ता है, तो उसे अल्परोजगार कहा जाता है।"

6 प्रच्छन्न (Disguised Unemployment) प्रच्छन्न बेरोजगारी में श्रमिक पूरी अवधि या पूरे समय तक काम करते प्रतीत होते हैं लेकिन उसका अधिकांश समय अनुत्पादक कार्यों में यों नष्ट होता रहता है। इस प्रकार की बेरोजगारी कृषि कार्य में व्यापक रूप से पाई जाती है। भारत में प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या बहुत ही गंभीर बनी हुई है। एक ही भाग लग पाता है और शेष समय यों ही व्यर्थ चला जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी और अल्परोजगारी में सारभूत रूप से कोई विशेष अंतर नहीं है। देश की पंचवर्षीय योजनाओं इस प्रकार की बेरोजगारी दूर करने विशेष कदम उठाए गये हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के अवसरों को सरकार के विशेष कार्यक्रम प्रच्छन्न बेरोजगारी के शिकार हो गए थे।

7 चक्रीय बेरोजगारी (Cyclical Unemployment) इस प्रकार की